

सामाजिक न्याय के लिए वैश्विक आंदोलन: सीमाओं के पार एकजुटता

डॉ.संजीव कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय सतपुली
खैरासैण, पौड़ी गढ़वाल
उत्तराखंड

सार

वैश्विक सामाजिक न्याय आंदोलनों ने निम्न वर्ग के समूहों के अस्तित्व के संघर्ष और व्यवस्थित अन्याय के प्रतिरोध को प्रतिबिंबित किया है। जलवायु परिवर्तन, वित्तीय प्रणाली की अस्थिरता और बढ़ती असमानता के कारण वैश्विक सहयोग और वैश्विक पूंजीवाद के सामाजिक विकल्पों की आवश्यकता है। इस शोध में सीमा-पार एकजुटता और प्रति-आधिपत्य संघर्षों के लिए संगठनात्मक ढाँचे की जाँच की गई है। 1953-2013 के अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन संगठनों के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। हमने आतंकवादी संगठनों (TSMO), वैश्विक दक्षिण की भागीदारी, क्षेत्रीयकरण और सामाजिक न्याय के कट्टरपंथ में पर्याप्त वृद्धि पाई। नेटवर्क लिंक अंतर-राज्यीय संगठनों के साथ चयनात्मक किन्तु रणनीतिक अंतःक्रिया दर्शाते हैं, जो गतिशील वैश्विक सहयोग का संकेत देते हैं। शीत युद्ध की समाप्ति, अमेरिकी आधिपत्य और वैश्विक शासन एक अधिक संबद्ध और एकीकृत वैश्विक सामाजिक न्याय आंदोलन का संकेत देते हैं।

बीज शब्द: वैश्विक सामाजिक न्याय, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन, सीमाओं के पार एकजुटता

विषय प्रवेश

21वीं सदी में आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय न्याय के हनन को ज़्यादा से ज़्यादा लोग चुनौती दे रहे हैं। जलवायु परिवर्तन, असमानता, प्रवासन और वित्तीय अस्थिरता के कारण देशों को न्याय और एकजुटता पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। ये कारक वैश्विक पूंजीवाद की कमज़ोरियों को उजागर करते हैं। इन युद्धों में वैश्वीकृत प्रतिरोध ज़्यादा आम होता जा रहा है [1]।

अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन और एकजुटता

हाल ही में, स्थानीय लामबंदी को एकजुट करने और संरचनात्मक परिवर्तन की वकालत करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन संगठनों (टीएसएमओ) की भूमिका लगातार बढ़ रही है [2]। सीमा पार की पहल श्रमिकों, स्वदेशी लोगों, पर्यावरणविदों और नारीवादियों को सामाजिक न्याय के लिए काम करने का अवसर देती है। अभियान समन्वय वैश्विक एकजुटता और प्रति-आधिपत्यवादी आंदोलन को बल प्रदान करता है [3]।

सीमाओं के पार एकजुटता

"एकजुटता" की यह परिभाषा व्यावहारिक और प्रतीकात्मक व्यवहारों को संदर्भित करती है जो राष्ट्रीय और क्षेत्रीय एकता को बढ़ावा देते हैं। हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि एकजुटता एक राजनीतिक और संगठनात्मक प्रयास है जो केवल करुणा ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी को भी बढ़ावा देता है [4]। वैश्विक न्याय की मांग करने वाले

आधुनिक सामाजिक आंदोलनों को एकजुटता की आवश्यकता है। ऑनलाइन मंच, वैश्विक प्रदर्शन और बहुराष्ट्रीय नेटवर्क इसमें मदद कर सकते हैं।

वैश्विक सामाजिक न्याय आंदोलनों की प्रासंगिकता

विश्व-व्यवस्था शिक्षाविद [5] निम्नवर्गीय संघर्षों को वैश्विक पूँजीवाद से जोड़ते हैं। सामाजिक न्याय संगठन वैश्विक सत्ता परिवर्तन और अमेरिकी आधिपत्य के विघटन के संदर्भ में लोकतंत्र, समानता और स्थिरता को बढ़ावा देकर राजनीति को बदल रहे हैं। क्रांति को समझने के लिए वैश्विक एकजुटता आंदोलनों की आवश्यकता है।

उद्देश्य

1. यह जांचना कि टीएसएमओ वैश्विक सामाजिक न्याय के लिए सीमा पार एकजुटता को किस प्रकार बढ़ावा देते हैं।
2. यह जांच करना कि अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन किस प्रकार विभिन्न अभिकर्ताओं और रणनीतियों का उपयोग करके आधिपत्यवादी प्रणालियों को चुनौती देते हैं

महत्व

अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक न्याय आंदोलनों का अध्ययन करके जानें कि कैसे अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक न्याय संगठन (TSMO) पर्यावरणीय आपदाओं, व्यवस्थागत अन्याय और अन्य वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए समुदायों को एकजुट करते हैं। इस अध्ययन में दर्शाया गया है कि संगठनात्मक संरचनाएँ, विधियाँ और नेटवर्क अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सक्षम बनाते हैं। यह पहल दर्शाती है कि सामूहिक कार्रवाई सत्ता प्रणालियों को चुनौती दे सकती है और अधिक न्यायसंगत वैश्विक अर्थव्यवस्था प्राप्त कर सकती है। हमारी तेजी से परस्पर जुड़ी हुई दुनिया में, विद्वानों, कार्यकर्ताओं और राजनेताओं को वैश्विक एकजुटता, सहभागी शासन और क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने की प्रक्रियाओं को समझना होगा।

शोध प्रक्रिया

इस अध्ययन के लिए TSMO डेटासेट UIA ईयरबुक ऑफ इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन से आया है। इस डेटासेट में बुनियादी TSMO डेटा है। इसमें संगठन की स्थापना तिथि, मुख्यालय, मुख्य चिंताएं, संचालन के देश, अन्य गैर-सरकारी और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से संबंध, सदस्यता प्रकार और संरचना शामिल हैं। वैश्विक सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, पर्यावरण न्याय और प्रति-आधिपत्य समूहों की जांच की गई। इस अध्ययन में श्रमिक अधिकार और सामाजिक न्याय संगठन ट्रेड यूनियनों की जगह लेते हैं। प्रत्येक संगठन की भागीदारी की निगरानी और वर्गीकरण करने से वैश्विक चिंताओं और एकजुटता की पहल को हल करने में मदद मिली। विघटन, विलय और समस्या पर जोर बदल गया [6]। 1973 के बाद TSMO के उदय की जांच 1953-2013 के आंकड़ों में की गई है। 1990 से पहले और बाद में बनाए गए संगठनों की जांच की गई गुणात्मक और मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करके अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता संगठन (टीएसएमओ), क्षेत्रीयकरण, वैश्विक दक्षिण जुड़ाव और वैश्विक सामाजिक न्याय आंदोलन विकास की जांच की जा सकती है।

रिव्यू आफ लिटरेचर

Çağatay, सेलिन और लीनासन, मिया और ससुन्केविच, ओल्गा। (2022), यह अध्याय इस बात की पड़ताल करता है कि आत्मीयता, देखभाल और संघर्ष जैसी भावनाएँ अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को कैसे आकार देती हैं, और भौगोलिक और संदर्भगत बाधाओं के पार कार्यकर्ताओं के प्रयासों का परीक्षण करता है। यह नारीवादी अंतर-समूह सहयोग प्रस्तावों के साथ औपनिवेशिक और राजकीय उत्पीड़न के प्रतिरोध में एकजुटता पर प्रकाश डालता है [7]।

थॉर्न, हाकन. (2006), जैसा कि यह पुस्तक दर्शाती है, युद्धोत्तर वैश्विक रंगभेद-विरोधी आंदोलन ने 1950 के दशक के उत्तरार्ध से लेकर 1994 तक राजनीतिक संस्कृति को प्रभावित किया। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन जैसी नवउदारवादी संस्थाओं के विरुद्ध वैश्विक नागरिक समाज की लामबंदी के लिए, इसके नेटवर्क और तकनीकें महत्वपूर्ण बनी हुई हैं [8]।

पोयारेस, मारियाना. (2024), यह शोधपत्र दर्शाता है कि कैसे प्रतिबंधित सीमा व्यवस्थाओं के अंतर्गत ज़मीनी स्तर पर प्रवासी अधिकारों के गठबंधन एकजुटता और पद्धतिगत राष्ट्रवाद को कमज़ोर करते हैं। नैसिमेटो, गागो और हुक्स जैसी नारीवादी, सीमा पार गठबंधनों पर ज़ोर देती हैं जो नए निर्वाचन क्षेत्र और सीमा पर एकजुटता का निर्माण करते हैं [9]।

अल्मेडा, पॉल और चेस-डन, क्रिस. (2018), यह शोध प्रबंध प्रवासी अधिकारों के गठबंधनों की पड़ताल करता है, यह दर्शाता है कि कैसे प्रतिबंधात्मक सीमा व्यवस्थाओं के तहत जमीनी स्तर के गठबंधन एकता की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देते हैं और पद्धतिगत राष्ट्रवाद की खामियों को उजागर करते हैं। नारीवादी नासिमेटो, गागो और हुक्स सीमा पार गठबंधनों की वकालत करते हैं जो नए निर्वाचन क्षेत्र बनाते हैं और सीमा पर एकजुटता को बढ़ावा देते हैं [10]।

पियंता, मारियो और मार्चेटी, रैफ़ेल और ज़ोला, ड्यूकियो। (2009), 1990 के दशक के उत्तरार्ध में उभरे वैश्विक न्याय आंदोलन ने दुनिया भर में लोकतंत्र, शांति और न्याय को बढ़ावा दिया, इस अध्याय में इसकी अंतरराष्ट्रीय सक्रियता और प्रमुख यूरोपीय सीमा पार समूहों का विश्लेषण किया गया है [11]।

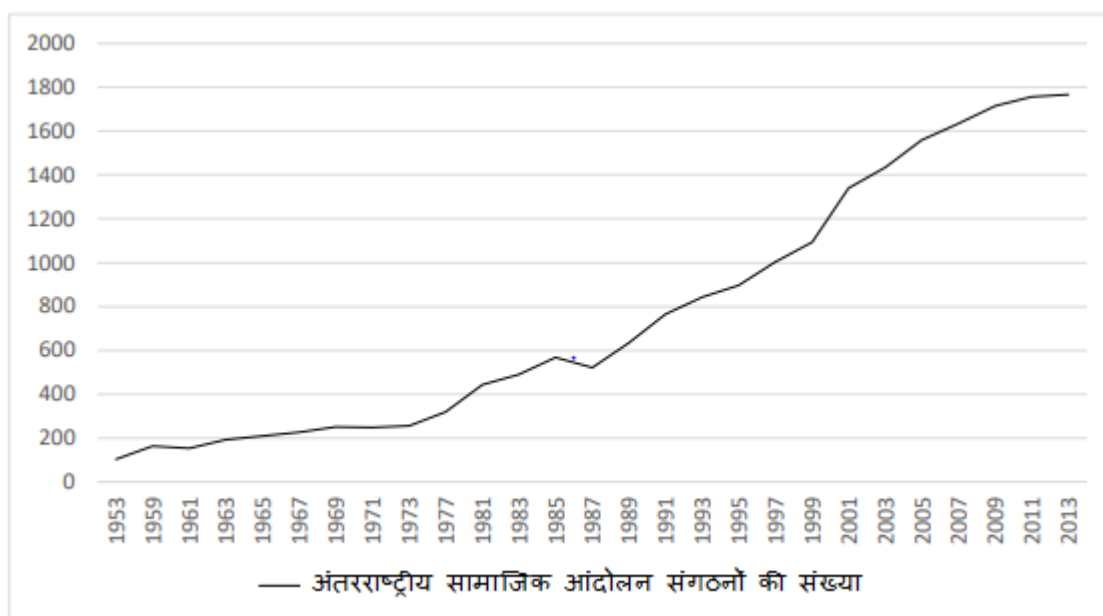
बढ़ते अनुसंधान के बावजूद, इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि सीमा पार एकजुटता किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करती है, इस अध्ययन में टीएसएमओ डेटा और गुणात्मक अंतर्दृष्टि का उपयोग करके यह दिखाया गया है कि वैश्विक आंदोलन किस प्रकार इसे बढ़ावा देते हैं।

परिणाम

अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलनों के क्षेत्र में विकास के रुझान

संधियों, निगरानी एजेंसियों और अंतर-सरकारी समूहों ने दुनिया भर में संचार को बढ़ावा दिया और 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी के प्रारंभ में वैश्विक चुनौतियों का समाधान किया। राज्य की नीति को प्रभावित करने या अंतर-पक्षीय उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए हित समूहों की स्थापना हुई क्योंकि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं विकसित हुईं, जिसने IGOs से पहले के प्रारंभिक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को आकार दिया। एंटी-स्लेवरी इंटरनेशनल (1839), अलायंस इज़राइली यूनिवर्सल (1860), इंटरनेशनल कमिटी ऑफ़ द रेड क्रॉस (1863), इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंटरनेशनल लॉ (1873), नॉर्डिक एंटी-विविसेक्शन सोसाइटी (1882), और इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर द डिफेंस ऑफ़ रिलीजियस लिबर्टी (1883)

ने मानवाधिकारों, पर्यावरण मानकों और सरकारी शक्ति सीमाओं को बढ़ावा दिया। ये अग्रणी विचार आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को सूचित करते हैं, चल रहे मुद्दों को रेखांकित करते हैं।



चित्र 1

: अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलनों के लिए संगठन, 1953-2013

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद TSMO की संख्या 100 से बढ़कर 21वीं सदी की शुरुआत में 2,000 से ज़्यादा हो गई, खासकर 1990 में अधिकारों, विकास और पर्यावरण पर हुए विश्वव्यापी सम्मेलनों के बाद [12]। बेहतर संचार और गतिशीलता ने औपचारिक समूहों के बिना भी भागीदारी को संभव बनाया और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जमीनी स्तर के संगठन वैश्विक मंचों और गठबंधनों में शामिल हुए। तालिका 1 आधुनिक सक्रियता में TSMO की प्रमुख चिंताओं को दर्शाती है, जिसे "ट्रांसलोकल" के रूप में जाना जाता है, जो स्थानीय और राष्ट्रीय नेटवर्क को एकीकृत करता है और वैश्विक आंदोलन की गतिशीलता और प्रणालीगत परिवर्तन को दर्शाता है।

तालिका 1: अंतरराष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के मुद्दे, 1973-2013

अंक / वर्ष	1973	1983	1993	2003	2013
मानव अधिकार	61.6%	59.3%	60.3%	63.9%	66.6%
शांति	37.7%	30.7%	27.6%	23.4%	23.2%
महिला अधिकार	14.1%	11.3%	14.2%	15.8%	17.1%
पर्यावरण	10.2%	14.1%	23.5%	27.3%	27.1%

आर्थिक	10.2%	12.7%	16.0%	18.4%	18.0%
मल्टी जारी करना	21.6%	22.5%	24.4%	23.0%	21.2%
अन्य सभी TSMOs	16.1%	18.0%	10.8%	6.9%	5.7%
एन (संगठन)	255	489	844	1434	1767

मानवाधिकार टीएसएमओ बढ़े हैं, जो इस विचार का समर्थन करते हैं कि प्रति-आधिपत्यवादी कार्रवाइयाँ मानवाधिकारों को मज़बूत बनाती हैं। 1973 और 2013 के बीच पर्यावरणीय टीएसएमओ 10% से बढ़कर 27% और आर्थिक टीएसएमओ 10% से बढ़कर 18% हो गए, जबकि शांति संगठनों की संख्या 38% से घटकर 23% हो गई। लगभग 20% संबंधित लेकिन अलग-अलग मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो सरकार और अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठनों की व्याख्याओं को चुनौती देते हैं। 2013 तक, 94% ने कुछ अंतर-क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया, जो संगठनात्मक एकीकरण को दर्शाता है। नए समूह पुराने समूहों की तुलना में अलग रणनीतिक विषयों पर ज़ोर देते हैं, जो समय के साथ मुद्दों के केंद्र में बदलाव को उजागर करते हैं।

कोर-परिधि विभाजन और भूगोल

इसके बाद, TSMO के भूगोल का अध्ययन करें। 1950 के दशक में, दक्षिणी TSMO उत्तरी TSMO की तुलना में आठ गुना तेज़ी से बढ़े, जिससे उत्तर-दक्षिण की भागीदारी में असमानताएँ पैदा हुईं। हमने वैश्विक स्तर पर उत्तरी सदस्यों और मुख्यालयों का दबदबा देखा। राजनीतिक व्यवस्था के उत्तरी और दक्षिणी भाग इस बेमेल का प्रतिनिधित्व करते हैं। बड़े वित्तीय संसाधन और आधुनिक बुनियादी ढाँचा जैसे हाई-स्पीड इंटरनेट और कुशल परिवहन बहुराष्ट्रीय उद्यमों को आकर्षित करते हैं। तालिका 2 प्रति स्थान वार्षिक TSMO सदस्यता दर दर्शाती है। पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि के बावजूद, पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका अभी भी TSMO में अधिक प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन हमारे आँकड़े बहुत कम बदलाव दिखाते हैं। इस प्रकार, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बाहरी भागीदारी पहले की तुलना में अधिक है। सोवियत संघ के पतन के बाद से मध्य एशिया की भागीदारी सबसे अधिक है।

तालिका 2: TSMO सदस्यों के स्थान, 1973–2013

क्षेत्र / श्रेणी	1973	1983	1993	2003	2013
पश्चिमी यूरोप	91.5%	87.1%	84.1%	83.8%	78.9%
उत्तरी अमेरिका	70.3%	67.4%	66.5%	59.9%	58.1%
पूर्वी यूरोप	66.1%	57.3%	59.6%	67.9%	65.1%
लैटिन अमेरिका और कैरिबियन	63.6%	65.5%	62.0%	55.6%	55.6%
मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका	63.1%	60.4%	53.3%	52.2%	52.2%

उप-सहारा अफ्रीका	55.9%	56.0%	56.7%	56.9%	55.4%
दक्षिण एशिया	53.8%	51.8%	51.7%	49.1%	48.9%
पूर्वी एशिया और प्रशांत	57.6%	56.0%	56.5%	53.8%	50.6%
मध्य एशिया	5.1%	6.5%	7.8%	15.6%	17.8%
TSMOs क्षेत्रीय पहचान का दावा कर रहे हैं	5.1%	7.2%	7.0%	33.4%	37.5%
TSMOs द्वारा कोई देश सदस्यता डेटा न देने की रिपोर्ट	236 (7.5%)	386 (21.1%)	690 (18.3%)	1075 (25.0%)	1173 (33.6%)

टीएसएमओ कार्यकर्ताओं ने क्षेत्रीय गठबंधनों का निर्माण तेज़ी से किया, 1973 और 2013 के बीच क्षेत्रीय संगठनों की संख्या 5% से बढ़कर 38% हो गई, और दक्षिणी मुख्यालयों की संख्या 11% से बढ़कर 25% हो गई, जो नेतृत्व और गैर-सरकारी संरचनाओं में बदलाव को दर्शाता है। तालिका 3 दर्शाती है कि इन बदलावों के बावजूद, शांति, महिला, पर्यावरण और स्वदेशी अधिकार संगठनों में दक्षिणी दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व कम ही है।

तालिका 3: ग्लोबल साउथ मुख्यालय का TSMOs में हिस्सा, 1973-2013

अंक / वर्ष	1973	1983	1993	2003	2013
मानव अधिकार	15.7%	20.6%	28.1%	27.5%	28.8%
शांति	12.9%	17.5%	18.5%	18.1%	20.7%
महिला अधिकार	25.0%	18.5%	33.1%	35.2%	33.4%
पर्यावरण	3.9%	11.8%	24.2%	23.8%	21.8%
आर्थिक	30.8%	27.9%	29.6%	33.7%	35.4%
स्वदेशी अधिकार	लागू नहीं	28.6%	37.5%	42.9%	38.0%
मल्टी जारी करना	18.2%	26.6%	31.7%	31.6%	34.1%
अन्य सभी TSMOs	0.0%	11.9%	10.1%	8.1%	7.1%
एन (संगठन)	249	482	829	1370	1734

1973 से 1993 तक, स्वदेशी, महिला अधिकार और आर्थिक न्याय समूहों ने अधिकांश क्षेत्रों में वैश्विक दक्षिण संगठनों पर अपना दबदबा बनाए रखा, जबकि 2003 में केवल 24% पर्यावरणीय TSMO दक्षिणी थे और 2013 में 22%।

तालिका 3 दर्शाती है कि दक्षिणी मुख्यालय शीत युद्धोत्तर TSMO सहित सात विषयों पर हावी हैं। दक्षिणी संगठन खाद्य सुरक्षा, जलवायु न्याय और विश्व सामाजिक मंचों को प्रभावित करते हैं [13]। पर्यावरणीय TSMO ग्रीनहाउस गैस सीमाओं और "जलवायु न्याय" पर विवाद करते हैं, लेकिन महिलाओं की कार्रवाई वैश्विक चर्चा को बढ़ाती है।

कनेक्टिविटी

अंतिम खंड TSMO के विश्वव्यापी ICSO और NGO के साथ संबंधों की जाँच करता है। तालिका 4 IGO/TSMO की तुलना करती है। जैसा कि अनुमान लगाया गया था, नए TSMO के विदेशों में संबंध कम हैं। शीत युद्ध के बाद के TSMO की 2013 में औसतन 1.3 साझेदारियाँ थीं, जो 3.0 से कम थीं। इन समूहों के IGO संपर्क कम हैं। असंबद्ध समूहों का प्रतिशत 2003 के 35% से घटकर 2013 में 27% हो गया, जबकि पुराने समूहों के औसत संपर्क 2.6 से बढ़कर 3.0 हो गए। पिछले और बाद के TSMO ने IGO संपर्क को मज़बूत किया। युवा समूह अंतरराष्ट्रीय भूमिका निभाते हैं। पहले की तरह, उत्तर-दक्षिण अंतराल मौजूद हैं। नए आँकड़े दर्शाते हैं कि 2013 में उत्तरी गोलार्ध के संगठनों के 2.3 IGO संपर्क थे, जबकि दक्षिणी गोलार्ध के समूहों के 1.7 थे।

तालिका 4: 2003 और 2013 में समूह के अनुसार TSMO और IGO के बीच संबंध

आईजीओ संबंध	1990 से पहले स्थापित 2003	1990 से पहले स्थापित 2013	1990 में स्थापित और 2003 में	1990 में स्थापित और 2013 में
0 टाई	34.9%	26.7%	48.1%	48.0%
1-2 टाई	26.3%	32.2%	37.0%	36.5%
3-5 टाई	24.9%	23.6%	10.3%	10.9%
>5 टाई	13.9%	17.6%	4.6%	4.6%
माध्य (एसडी)	2.6 (3.4)	3.0 (4.0)	1.2 (2.0)	1.3 (2.1)
एन	779	653	370	608
अधिकतम संबंध	25	44	12	17

तालिका 4 दर्शाती है कि आर्थिक, मानवाधिकार, पर्यावरण और महिला अधिकारों के लिए काम करने वाले टीएसएमओ (TSMO) अंतरराष्ट्रीय मंचों को तेजी से दरकिनार कर रहे हैं, क्योंकि 1990 के दशक में नवउदारवाद और घटते विश्वास ने संयुक्त राष्ट्र-एनजीओ संबंधों को कमजोर कर दिया था [14]। टीएसएमओ (TSMO) ने रणनीतिक रूप से श्रम को विभाजित किया, गठबंधन बनाते हुए अंतराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों (IGO) के साथ सूचना साझा की, नेटवर्किंग और बढ़ते टीएसएमओ-आईएनजीओ संबंधों ने स्थानीय-वैश्विक प्रभाव को बढ़ाया (तालिका 5)

तालिका 5: 2003 और 2013 में समूह के अनुसार TSMO और INGO के बीच संबंध

आईएनजीओ संबंध	1990 से पहले स्थापित 2003	1990 से पहले स्थापित 2013	1990 में स्थापित और 2003 में	1990 में स्थापित और 2013 में
0 टाई	11.9%	11.8%	16.2%	15.1%
1-2 टाई	46.5%	39.5%	55.4%	54.4%
3-5 टाई	22.0%	23.6%	15.4%	15.6%
>5 टाई	19.6%	25.1%	13.0%	14.8%
माध्य (एसडी)	3.8 (5.6)	4.6 (6.4)	3.0 (5.6)	3.4 (7.3)
एन	779	653	370	608
अधिकतम संबंध	55	50	72	100

शोध से पता चलता है कि टीएसएमओ अंतरराष्ट्रीय मंचों से आगे बढ़कर, गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय समूहों के साथ मजबूत संबंध बना रहे हैं, जबकि तकनीकी प्रगति वैश्विक नेटवर्क का विस्तार कर रही है [15]। इस बीच, स्थानीय कार्यकर्ता स्थानीय चिंताओं पर वैश्विक प्रभावों को संबोधित करने के लिए लंबे समय से चली आ रही प्रति-आधिपत्यवादी परंपराओं का सहारा ले रहे हैं।

परिचर्चा

पूँजीवादी दुनिया अस्थिर है, लेकिन हमारा विश्लेषण एक उभरते और संगठित अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन (टीएसएमओ) क्षेत्र को प्रदर्शित करता है जो वैश्विक सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकारों पर केंद्रित है। वैश्वीकरण और संरचनात्मक असमानताओं से लड़ने के लिए पिछले 60 वर्षों के दौरान नए स्वदेशी और महिला संगठनों ने वैश्विक दक्षिण में मुख्यालय स्थापित किए हैं। ये आंदोलन नागरिक समाज नेटवर्क को मजबूत करके, अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ चुनिंदा रूप से सहयोग करके और स्थानीय-वैश्विक संबंधों को बनाए रखते हुए समस्या-क्षेत्र-विशिष्ट संस्थागत और संघर्ष की गतिशीलता को दर्शाते हैं। इवांस (2008) इन विकासों को प्रति-आधिपत्य वैश्वीकरण और गैर-वैश्वीकरण कहते हैं, जहां क्षेत्रीय एकाग्रता और क्षेत्रीय लिंक स्थानीय संगठनों को लोकतांत्रिक, समतावादी और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं। वाया कैम्पेसिना जैसी अंतरराष्ट्रीय पहल ये नेटवर्क क्षेत्रीय गतिशीलता, संघर्ष के स्वरूप और स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा सामुदायिक हितों को प्राप्त करने के लिए वैश्विक नेटवर्क का उपयोग करने के तरीके को उजागर करते हैं, तथा सामुदायिक लचीलेपन के लिए समन्वित अंतरराष्ट्रीय प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन पिछले साठ वर्षों में TSMOs की असाधारण वृद्धि और विकास तथा वैश्विक एकजुटता और सामाजिक न्याय में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। TSMOs वैश्विक पूंजीवाद और प्रणालीगत असमानताओं को चुनौती देते हैं और लोकतंत्र में शामिल होने, समुदायों का निर्माण करने और पर्यावरण को संरक्षित करने के नए तरीके प्रदान करते हैं। स्थानीय तनाव वैश्विक TSMO परियोजनाओं के साथ मिश्रित हैं। वैश्विक दक्षिण संगठनों का उदय, उनके मुद्दों की विविधता और नागरिक समाज नेटवर्क के साथ उनके रणनीतिक गठबंधन से पता चलता है कि वे अब सीमा पार गठबंधन बना सकते हैं। इन आंदोलनों की कनेक्टिविटी इसे प्रदर्शित करती है। मुद्दे और स्थान के आधार पर विभिन्न तरीकों के बावजूद, एक वैश्विक रूप से शामिल, अनुकूलनीय, नेटवर्क वाला कार्यकर्ता आंदोलन जो राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रणालियों का पूर्वानुमान लगा सकता है, विकसित हो रहा है। उनके अध्ययन से पता चलता है कि दुनिया भर में सामाजिक न्याय परियोजनाओं को और अधिक शोध और समर्थन की आवश्यकता है

संदर्भ

1. स्मिथ, जे., जेमिसी, बी., प्लमर, एस., और ह्यूजेस, एम.एम. (2018)। आज के अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन संगठन और प्रति-आधिपत्य संघर्ष। *जर्नल ऑफ वर्ल्ड-सिस्टम्स रिसर्च*, 24(2), 372–402।
2. टैरो, एस. (2005). नई अंतरराष्ट्रीय सक्रियता. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. केक, एम., और सिकिक, के. (1998). सीमाओं से परे कार्यकर्ता: अंतरराष्ट्रीय राजनीति में वकालत नेटवर्क. कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. डैफी, पी. (2014). वैश्विक न्याय आंदोलन में अंतरराष्ट्रीय एकजुटता. *इंटरफ़ेस: सामाजिक आंदोलनों के लिए और उनके बारे में एक पत्रिका*, 6(2), 23–45.
5. वालरस्टीन, आई. (2004). विश्व-प्रणाली विश्लेषण: एक परिचय. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस
6. बोली, जॉन और जॉर्ज थॉमस। 1999. "इंगोस और विश्व संस्कृति संगठन।" पृष्ठ 13-48, "विश्व संस्कृति का निर्माण: 1865 से अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन", जे. बोली और जी.एम. थॉमस द्वारा संपादित। स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
7. Çağatay, सेलिन और लीनासन, मिया और ससुन्केविच, ओल्गा। (2022)। सभी ओर एकजुटताएँ: सीमाएँ, अपनापन, आंदोलन। 10.1007/978-3-030-84451-6_4.
8. थॉर्न, हाकन (2006). सीमाओं के पार एकजुटता: अंतरराष्ट्रीय रंगभेद विरोधी आंदोलन. *वोलंटस: स्वैच्छिक और गैर-लाभकारी संगठनों का अंतरराष्ट्रीय जर्नल*. 17. 285-301. 10.1007/s11266-006-9023-3.
9. पोयारेस, मारियाना. (2024). सीमा एकजुटता. *क्रिटिकल टाइम्स*. 7. 478-501. 10.1215/26410478-11394927.
10. अल्मेडा, पॉल और चेज़-डन, क्रिस (2018)। वैश्वीकरण और सामाजिक आंदोलन। *समाजशास्त्र की वार्षिक समीक्षा*। 44. 1-23. 10.1146/annurev-soc-073117-041307।

11. पियंता, मारियो और मार्चेटी, रैफ़ेल और ज़ोला, ड्यूकियो। (2009)। क्रॉसिंग बॉर्डर्स: यूरोपीय सामाजिक आंदोलनों में अंतरराष्ट्रीय सक्रियता। 10.1057/9780230240865_11.
12. आर्चर, एंगस। 1983. "बहुपक्षीय प्रबंधन के तरीके: अंतर-सरकारी संगठनों और गैर-सरकारी संगठनों का अंतर्संबंध।" टीटी गति द्वारा संपादित, "द यूनाइटेड स्टेट्स, द यूएन एंड द मैनेजमेंट ऑफ़ ग्लोबल चेंज" में पृष्ठ 303-25। न्यूयॉर्क: न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. विलेट्स, पीटर. 1996a. "स्टॉकहोम से रियो और उसके आगे: पर्यावरण आंदोलन का एनजीओ के लिए संयुक्त राष्ट्र परामर्शदात्री व्यवस्था पर प्रभाव." अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन की समीक्षा 22:57-80.
14. देसाई, मनीषा. 2015. भारत में निम्नवर्गीय आंदोलन: नवउदारवादी विकास के विरुद्ध संघर्ष का लैंगिक भूगोल. न्यूयॉर्क: रूटलेज.
15. ज्यूरिस, जेफ़री एस. 2008a. नेटवर्किंग फ़्यूचर्स: कॉर्पोरेट वैश्वीकरण के विरुद्ध आंदोलन. डरहम, एनसी: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस.
16. इवांस, पी. (2008). क्या वैकल्पिक वैश्वीकरण संभव है? राजनीति और समाज, 36(2), 271–305. <https://doi.org/10.1177/0032329208316570>